

पाठ—15 नीलकण्ठ लेखिका महादेवी वर्मा

लेखिका का ध्यान स्टेशन के पास वाली दुकान बड़े मियाँ चिड़ियावाले की ओर गया।

लेखिका ने दुकान पर जाकर मोर के बच्चों के बारे में पूछा तो बड़े मियाँ ने तार के छोटे पिंजड़ों में बैठे उस मोर मोरनी के जोड़े को दिखा दिया।

लेखिका ने उस जोड़े को तीस रुपए में खरीद लिया।

लेखिका ने लक्का कबूतर, बड़े खरगोश आदि के साथ मोर मोरनी रख दिया जिसे देखकर ऐसा लगा कि चिड़ियाघर में भूचाल आ गया।

परिवार में सम्मिलित करने पर मोर और मोरनी का नामकरण किया गया जिसमें मोर का नाम नीलकंठ और मोरनी का नाम राधा रखा गया।

नीलकंठ को चिड़ियाघर का सेनापति व संरक्षक नियुक्त किया गया।

बसंत ऋतु में बहार आने पर नीलकंठ जालीघर से बाहर छोड़ने पर खेलता था। और राधा भी उसके साथ छाया समान वहीं खेलती रहती थी।

लेखिका ने सात रुपए में कुब्जा नाम की अन्य मोरनी खरीदी।

कुब्जा राधा से नीलकंठ के साथ छाया समान रहने के कारण ईर्ष्या करती थी।

कुब्जा ने ईर्ष्या के कारण राधा के अण्डे तोड़ दिए ।

नीलकंठ राधा का वियोग नहीं सह सका और मृत्यु को प्राप्त हो गया ।

अंततः राधा अकेली ही नीलकंठ का इंतजार करती रहती है ।

लेखिका ने इस रेखाचित्र के माध्यम से परिवार में होने वाली ईर्ष्या और उसके दुष्परिणामों का चरित्रांकन किया है । उन्होंने प्रेमभाव से रहने वाले परिवार की खूबियों को भी अपने इस रेखाचित्र के माध्यम से प्रस्तुत किया है जो कि संदेशप्रद है कि घृणा एक हँसते खेलते परिवार को भी समाप्त कर सकती है ।